तुम्ही हो मात पिता... ओम शान्ती प्रातः क्लास 9-3-67 == [illegible]

बच्चों ने ओम शान्ती का अर्थ समझा है। बाप ने समझाया है कि हम आत्मा है। इस सृष्टी ड्रामा के अन्दर हमारा मुख्य पार्ट है। किसका पार्ट है? आत्मा शरीर धारन कर पार्ट बजाती है। तो बच्चे अभी आत्मअभिमानी बन रहे है। इतना समय देह अभिमानी थे। अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। हमारा बाप आया हुआ है ड्रामा प्लान अनुसार। बाप आते भी है रात्री में। कब आते है उसकी तीथी तारीख कोई नही है। तिथी तारीख उनकी होती है जो लौकिक जन्म लेते है। यह तो है परलौकिक बाप। इनका लौकिक जन्म नही है। कृष्ण की तिथी तारीख समय आद सब कुछ देते है। इनका तो कहा ही जाता है दिव्य जन्म। बाप इनमें प्रवेश कर बताते है कि यह बेहद का ड्रामा है। उसमें आधा कल्प है बेहद का दिन आधाकल्प है बेहद की रात। जब रात अर्थात घोर अन्धेरा होता है तब मैं आता हूँ। तिथी तारीख कोई नही। जब रावण राज्य का अन्त होता है उसको घोर अन्धेरा अन्त कहा जाता है। इस समय भक्ति भी तमोप्रधान है बाप खुद कहते है मैने इनमें प्रवेश किया है। गीता में है भगवानोवाच। परन्तु भगवान मनुष्य हो नही सकते। कृष्ण भी दैवी गुणों वाला मनुष्य है। यह मनुष्य लोक है। यह देवता लोक नही है। गाते भी है ब्रह्मा देवताये नमः विष्णु देवताये नमः.... वो है सुक्ष्म वतन वासी। बच्चे जानते है कि वहांपर हड्डी मास नही होता है। मनुष्य हड्डी मास का पुतला होता है। वो है सुक्ष्म, सफेद छाया की आत्मा जो कि सुक्ष्म वतन में है तो ना उनको है सुक्ष्म शरीर छाया वाला ना ही हड्डी वाला होता है। इन बातों को कोई भी मनुष्य मात्र नही जानते है। बाप ही आकर सुनाते है। ब्राह्मण ही सुनते है ब्राह्मण वर्ण होता ही है भारत में। वो भी तब होता है जब परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा दवारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना करते है। अब उनको रचता भी नही कहेंगे। नई रचना कोई रची नही है। सिर्फ रिजुविनेट करते है। बुलाते भी है हे बाबा पतित दुनिया में आकर हमको पावन बनाओ। अब तुमको पावन बना रहे है। तुम फिर योग बल से इस सृष्टी को पावन बना रहे हो। माया पर तुम जीत पहन कर जगत जीत बनते हो। योगबल को साईलेन्स बल भी कहा जाता है। ऋषि मुनि आद सब शान्ती ही चाहते है। परन्तु शान्ती का अर्थ तो जानते ही नही है। यहाँ तो जरूर पार्ट बजाना है ना। शान्ती धाम है स्वीट साईलेन्स होम। तो अब आत्माओं को मालुम है कि हमारा घर शान्ती धाम है। यहाँ हम पार्ट बजाने आते है। बाप को भी बुलाते है हे पतित पावन दुःख हरता सुख करता आओ। हमको इस रावण की जंजीरों से छुडाओ। बच्चे जानते है भक्ति है रात। ज्ञान है दिन। रात मुर्दाबाद होती है तो फिर ज्ञान दिन जिन्दाबाद होता है। यह है खेल है सुख और दुःख का। तुम जानते हो पहले-2 हम स्वर्ग में थे। फिर उतरते-2 नीचे आकर नर्क में पड़े है। सतयुग के बाद त्रेता फिर दवापुर होता है। फिर कलियुग होता है। परन्तु उनकी भी आयु का पता नही है। कलियुग कब खलास होगा सतयुग कब आवेंगे यह भी जानते नही है। तुम बाप को जानने से बाप दवारा सब कुछ जान गये हो। मनुष्य भगवान को ढूढने लिये कितने धक्के खाते है। बाप को जानते ही नही है। जानें तब जब बाप आकर अपना तथा अपनी जायदाद का परिचय दे। वर्सा बाप से ही मिलता है। मां से नही। इनको भी मम्मा कहते है परन्तु इनसे भी वर्सा नही मिलता है। इनको याद भी नही करना है। ब्रह्मा विष्णु शंकर भी शिव के बच्चे है। यह भी कोई नही जानते है। बेहद का रचता एक ही बाप है। बाकी सब है रचना। मनुष्य सृष्टी को कहा ही जाता है रचना। सारी दुनियां का रचता एक ही बाप है। बाकी है हद की रचनायें। अब तुम बच्चों को बाप कहते है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावें। मनुष्य बाप को नही जानते है तो किसको याद करें। तो निधणके हुये ना। यह भी ड्रामा में ही नूंध है। अब मैं कितना देने और कितना लेने आया हूँ। भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ दान करते है ना। किस लिये? कोई कामना तो जरूर रखते हो समझते है समझते है जैसा कर्म करेंगे उसका फल अगले जन्म में जरूर पावेंगे। इस जन्म

شو بابا کا کرم - اکرم - وکرم کی گتی سمجھانا - دیوتاؤں اور اسروں کی لڑائی کا بھید

इस जन्म में जो करेंगे तो उसका फिर दूसरे जन्म में पावेंगे। जन्म जन्मान्तर नही पावेंगे। एक जन्म लिये फल मिलता है। सबसे अच्छे ते अच्छा कर्म होता है दान करना। दानी को पुण्यात्मा कहा जाता है। भारत को महादानी कहा जाता है। भारत में जितना दान होता था उतना और कोई खण्ड में नही होता था। बाप भी आकर बच्चों को दान करते हैं बच्चे फिर बाप को दान करते हैं। कहते भी हैं बाबा आप जब आवेंगे तो हम अपना तन मन धन सब आपके ही हवाले कर देंगे। आप बिना हमारा कोई भी नही है। बाप भी कहते हैं मेरे लिये तुम बच्चे ही हो। मुझे कहते ही हैं हैवनली गाड फादर। अर्थात स्वर्ग की स्थापना करने वाला। मैं आकर तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ। उनको जो कि मैं अर्थ सबकुछ दे देते हैं। सब कुछ आपका है। भक्ति मार्ग में भी कहते थे बाबा यह सब कुछ आपका ही दिया हुआ है। फिर जाता है तो दुःख हो जाता है। वो है भक्ति का अल्प काल का सुख। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में तुम मुझे दान पुण्य करते रहते हो इनडायरेक्ट। उसका फल तो तुमको मिलता ही रहता है। इस समय मैं बैठ तुमको कर्म अकर्म विकर्म की गति समझाता हूँ। भक्ति मार्ग में तुम जैसे कर्म करते हो उनका अल्प काल का सुख भी मेरे दवारा मिलता ही रहता है। इन बातों को दुनियां में कोई भी जानते नही है। बाप ही आकर कर्मों की गति समझाते हैं। सतयुग में कब कोई बुरा कर्म ही नही करते हैं। सदैव सुख ही सुख है। याद भी करते हैं सुखधाम को। स्वर्ग को। अभी बैठे हो नर्क में। फिर भी कह देते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। आत्मा को स्वर्ग कितना अच्छा लगता है। आत्मा ही कहती है ना फलाना स्वर्ग पधारा। परन्तु तमोप्रधान होने कारण उनको कुछ पता नही लगता है कि स्वर्ग क्या था कब था स्वर्ग क्या है। बेहद का बाप कहते हैं तुम कितने तमोप्रधान इडियट बन गये हो। ड्रामा को तो जानते ही नही है। समझते भी है कि सृष्टी का चक्र फिरता है तो हू बहू फिरेगा नां। वो तो सिर्फ कहने मात्र कह देते हैं। अब तुम जानते हो कि कलियुग के बाद जरूर सतयुग आना ही है। अभी है संगम युग। इस एक ही संगम युग का गायन है। आधा कल्प देवताओं को राज्य चलता है। फिर वो देवताओं का राज्य कहां चलो गया। कौन जीत लेता है यह भी किसको पता नही है। बाप कहते हैं कि रावण जीत लेता है। वो ही देवी देवतायें वाम मार्ग में जाने कारण पतित बन जाते हैं। तो कहेंगे देवताओं को रावण ने हराया। उन्होंने फिर देवताओं और असुरों की लड़ाई बैठ दिखाई है। अब बाप समझाते हैं 5 विकारों रूपी रावण से हारते हो। फिर जीत भी पाते हैं रावण पर। तुम सो पूज्य थे फिर सो पुजारी पतित बन गये हो। तो रावण से हारे हो नां। यह तुम्हारा दुश्मन होने कारण तुम सदैव जलाते रहते हो। परन्तु तुमको पता नही है। अब बाप समझाते है कि रावण के कारण तुम पतित बन गये हो। 5 विकारों को ही माया कहा जाता है। माया जीते जगत जीत। यह रावण सबसे पुराना दुश्मन है। अभी श्रीमत से इन 5 विकारों पर तुम जीत पहनते रहे हो। बाप आये ही है जीत पहनाने। यह खेल है नां। माया से हारे हार है माया से जीते जीत है। जीत बाप ही पहनाते है। इसलिये उनको सर्वशक्तिवान कहा जाता है। रावण भी कोई कम शक्तिवान नही है परन्तु वो दुःख देता है। इसलिये ही उसका गायन नही है। रावण है बहुत कुतर। तुम्हारी राजाई ही छीन लेते है। अब तुम समझ गये हो कि हम कैसे हारते है फिर कैसे जीत पहनते हैं। आत्मा चाहती भी है कि हमको शान्ती चाहिये। शान्ती देवा। हम अपने घर जावें। भक्त लोग भगवान को याद करते है। परन्तु पत्थर बुधी होने कारण समझते नही है। भगवान बाबा है तो जरूर बाबा से वर्सा मिलता होगा। मिलता भी जरूर है परन्तु कब मिलता है फिर कैसे गंवाते है यह नही जानते हैं। बाप कहते है मैं इस ब्रह्मा तन दवारा तुमको समझाता हूँ। मुझे भी आरगन्स चाहिये नां। मुझे अपनी कर्म इन्द्रियां तो है नही। सूक्ष्म वतन में भी कर्म इन्द्रियां है। चलते फिरते है, जैसे मूवी बाइसकोप होता है। यह मूवी और टाकी बाइसकोप निकले है तो बाप को भी समझाने में सहज होता है। इनको है बाहुबल। तुम्हारा है योगबल। वो भी अगर भाई आपस में मिल जावें तो विश्व पर राज्य कर सकते है।

دوار انڈائریکٹ ملتا سورگ راون عقل دان دشمن وشنو بائیسکوپ بائبل

न्तु अभी तो फूट पड़ी हुई है। वो है साईस घमण्डी। बाप तुमको साईलेन्सघमण्डी बनाते है।मनमनाभव। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम जगत जीत बनेंगे। याद से तुम सतोप्रधान बन जावोगे।बहुत सहज उपाय बताते है। तुमजानते हो शिव बाबा आये है हम बच्चो को फिर से स्वर्ग का वर्सा देने तुम्हरा जो भी कलियुगी कर्म बन्धन है बाप कहते है उनको भूल जाओ। 5विकार भी हमको दान में दे दो।तुम जो मेरा2 करते आये हो,मेरा पति मेरा फलाना।यह सब भूल जाओ।यह सबहोते हुये उनको देखते हुयेउनसे ममत्व मिटा दो।यह बाप बच्चो को ही समझाते है। जो बाप को जानते ही नही है वो तो इस बाबा को भी समझ नही सकेंगे। बाप आकर मनुष्य से देवता बनाते है।देवतायें होते ही है सतयुग में। कलियुग में होते ही है मनुष्य। आदी सनातनदेवता धर्म सतयग में था। अभी तक उसकी निशानिया है।अर्थात चित्र है। बाप समझाते है। आगे तो तुम मेरे लिये गाते थे आप ही पूज्य आपही पूजारी। परन्तु मैं तो मनुष्य तन धारन करता हूँ।मुझे कहते ही है। हे पतित पावन।... मैं तो डिग्रेड होता नही हूँ। तुम कहते हो हम पावन थे फिर डिग्रेड हो पतित बने है। अब आप आकर पावन बनाओ तो हम अपने घर जावे। यह भी जानते हो कि भारतकितना ऊंच था। यह है स्प्रीचुअल अविनाशी ज्ञान रत्न हैं ना। शास्त्रों की है फिलासाफी। उनमें पत्थर ही पत्थर है। जिससे तुम पत्थर बुधी बन पडे हो। कह देते हो परमपिता परमात्मा है भित्तर ठिक्कर में है। तो पत्थर बुधी हुये ना। भक्ति मार्ग में रावण द्वारा पत्थर बुधी बनते हो। यह है नई नालेज। बाप कहते है अभी तुमको यह नालेज सिखाता हूँ। रचता और रचना के आद मध्य अन्त का राज़ बताता हूँ।अब है पुरानी दुनियाँ। इसलिये तुम्हारे को भी मित्र आद है देह सहित सबसे ममत्व निकाल दो।मेरे हवाले कर दो।मैं फिरस्वर्ग की बादशाही 21जन्मो लिये तुम्हारे हवाले करता हूँ। है लेन देन तो होती है,ना। बाप तुमको 21जन्मो लिये राजभाग देते है।21 जन्म21 पीढ़ी गाई जातीहै ना अर्थात 21 जन्म पूरी लाईफ चलती है। बीच में कब शरीर छूट नही सकता।अकाले मृत्यु नही होगी। तुम अमर बन और अमर पुरी के मालिक बनते हो।तुमको कब काल खा नही सकता। अभी तुम मरने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। देह सहित सब देह के सम्बन्ध छोड़ एक बाप से सम्बन्ध रखते है।अब जाना ही है सुख के सम्बन्ध में।दुख के सम्बन्धो को भूलते जावेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है।बाप कहते है मामेकम् याद करो। साथ दैवी गुण भी धारन करो। इन देवताओं जैसा बनना है। यह है ऐम आवजेक्ट।यह ल-न स्वर्ग केमालिक थे।इन्होंने कैसे राज्य पाया फिर कहां गये, यह किसीको भी पता नही है। अब तुम जानते हो कैसे 84जन्म ले ऐसे बन जाते है। अभी तुम बच्चो को दैवी गुणधारन करने है। किसको भी दुःख नही देना है। बाप है ही दुख हरता सुख करता। तो तुमको भी सभी सुख का रस्ता बताना है। अर्थात अन्धो की लाठी बनना है।तुम भी अन्धो की औलाद अन्धेथे। अब बाप से ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। अब तुम जानते हो बाप कैसे पार्ट लेता है। अब बाप जो तुमको पढ़ा रहे है फिर यह पढ़ाई प्रायःलोप हो जावेगी। देवताओं में यह नालेज रहती नहीहै। तुम ब्रह्मा मुखवंशावली = ब्राह्मण ही रचता और रचना की ज्ञान को जानते है। और कोई जान नही सकते। इन ल-न आदमें अगर यह ज्ञान होत तो परमपरा से चला ही आता। वहां ज्ञान की दरकार ही नही है। क्यों कि वहा है ही सदगती। अब तुम सब कुछ बाप को दान देते हो। तो फिर बापतुमको 21 जन्मो के लिये सब कुछ देते है।ऐसा दान कब होता नही है। तुम जानते हो हम सरेन्डर कर देते है। बाबा सब कुछ ही आपका है। आप ही हमारे हो। त्वमेव माता श्च पिता. ... आप ही हो। पाठ तो बजाते है ना। बच्चो को ऐडाप्ट भी करते है फिर खुद ही पढ़ाते है। फिर खुद ही गुरु बन कर सबको ले जाते है। कहते है तुम है मुझे याद करो तो पावन बन जाओगे। फिर तुमको साथ ले जाऊंगा। यह यज्ञ रचा हुआ है।यह है शिव ज्ञान यज्ञ। इसमें कमाई भी है। तुम तन मन धन सब इसमें स्वाहा कर देते हो खुशी से।

जब अर्पण हो जाता है। बाकी आत्मा रह जाती है। बाबा बस अब हम आपके ही मतअपर चलते है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है। 60 की की आयु होती है तो उसको वानप्रस्थ अवस्था कहा जाता है। इनमें भी 60 की की आयु में ही हमने प्रवेश किया तो इनसे सब कुछ छुड़वा दिया। बाप कहते है बहुत जन्मों के भी अन्त के जन्म के भी अन्त मे मैं आता हूँ। तो वानप्रस्थ अवस्था हुई नां। अब तुम सच्ची-2 वानप्रस्थ अवस्थायें जाने की तैयारी करते हो। और कोई वापस जाने लिए थोड़ेही तैयारी करते है। अब बाप सबको कहते है तुम्हारी वानप्रस्थ अवस्था है इस लियेमनमनाभव। वानप्रस्थ अवस्था में ही गुरू से मन्त्र लिया जाता है। अबतुम सतगुरू का मन्त्र लेते हो। मनमनाभव। यह हैभगवानोवाच । मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। सबको पता अब सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। अब शिव बाबा को याद करो। अब जाना है घर। वो है शिव पुरी। वो विष्णु पुरी। यह है रावण पुरी। नर्कवासी पुरूषार्थ अनुसार बाप के बनते है। कोई तो बाप को बनते भी है फिर अहो मम माया भागन्ती हो जाते है। ड्रामा में जो कल्प पहले हुआ है वो ही होगा नां। तुम समझते हैं कल्प पहले भीऐसेही हुआ होगा। घुटका खाने की बात नही है।नथिंग न्यू। हम क्यों चिंता करें। तुमको तो बाप निर्मोही बना देते है। फलाना गया तो क्या हुआ। मोहजीत राजा की कथा भी है नां। सतयुग में राजा लोग मोहजीत होते है। वहां अकाले मृत्यु है होता ही नही है।तो बाप इस समय तुमको निर्मोही बनाते है। एक बापके सिवाय दूसरा न कोई। ऐसे निर्मोही बनना पड़े। वहां यथाराजा रानी तथा प्रजा ही निर्मोही होते है। रोने की बात ही नही है।इस समय यह राजधानी स्थापन होरही है। जो अच्छी रीती बाप का बन कर और पढ़ते है और फिर इसी ही बाबा की सर्विसमें लगा हुआ है तो वो जरूर ऊंच पद पावेंगे। सबको यह रास्ता बताना है। यह सभी चित्र भी बाबा ने ही बनवाये है। यह थोड़ेही जानते थे।यह कोई गुरू सन्यासी थोड़ेही सीखाना जानते है। अगर यह किसी गुरू का फालोवर्स होता तो और भी कितने हीफालोवरसहोते। अकेला थोड़ेही होता। खुद बाप ने तुम बच्चों द्वारा यह चित्र बैठ बनवाये है जिससे समझाना सहज हो जाता है। बाबा ने कहा है हर एक चित्र पर लिख दो ज्ञान सागर पतित पावन, गीता ज्ञान दाता, परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ती शिव। यह भी लिख दो कि भगवानोवाच झूठी गीता से भारतवासी नर्कवासी बन गये है।सच्ची गीता से भारतवासी स्वर्गवासी बन रहे है। बड़े-2 अक्षरों में लिखना चाहिये। गीता ही खण्डन की है। गीता है ही आदी सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र। दूसरे धर्म वालों की बात ही नही।इनके साथ कयनट्री की भेंट करते है। जैसे उनका भी थुर खत्म हो गयाहै। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। वैसे ही देवी देवता धर्म का थुर नहीहै बाकी सारा झाड़ खड़ा है।देवताओं के सिर्फ चित्र ही है। क्योंकि यह ल-न स्वर्ग के मालिक थे। तो जरूर स्वर्ग की बादशाही उनको मिली होगी। बाप खुद बैठ सुनाते हैकिमनें तुमको स्वर्ग की बादशाही कैसे दी। फिर तुमने कैसे गंवाई है। यह भगवानोवाच है।यह है गाडफादरली व र्ल्ड युनिवरसिटी। इनकी ऐम आबजेक्ट ही यह सामने खड़ी है। कितना क्लीअर लिखाहुआ है। ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना हो रही है। शंकर द्वारा विनाश। विष्णु द्वारा पालना। यह तुम अभी समझते हो। हम राजयोग ले रहे है। ल-न की डायनेस्टी थी। इस समयनही है।अभी ब्राह्मण धर्म है। डायनेस्टी उसको कहेंगे जो परमपरा राज्य चला ही आवे। आगे चलकर देखोंगे कि गांव-2 में तुम्हारे यह कालेजिज होंगे। इसमें चाहिये सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के। तीन पृथवी में बैठ कर तुम मनुष्य को देवता बनाते हो। हर एक तीन पैर पृथ्वी पर ही बैठने वाले है। बापनें समझाया है कि तुम्हारे कदम-2 पर ही पदम है। तुमको कोई एक ही जगह पर बैठ कर ही थोड़ेही याद करना है। वो तो भक्ति में धरना मार कर बैठ जाते है। तुमको तो बाप बहुत ही सहज रीती बताते है। तुम कहते भी हो कि पतित पावन आओ तो [illegible] तो बापअब श्रीमत देते है किपवित्रबनो। आज पांचों विकारों का दान दो।ओम